दादा भगवान परिवार का

सितम्बर २०१८

शुल्क प्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

खानदानी

संपादकीय

बालमित्रों,

आपने संस्कार शब्द तो सुना ही होगा। संस्कार बहुत ऊँची चीज़ है। संस्कारी लोगों के प्रति सभी को आदर होता है। जहाँ संस्कार होते हैं वहाँ सुख होता है, शांति होती है, सभ्यता होती है, विनम्रता आदि होती है।

दादाजी भी बचपन से बहुत संस्कारी थे। वे हमेशा कहते कि हमें हमारी माता से बहुत ऊँचे संस्कार मिले हैं।

इस अंक में संस्कार से संबंधित बहुत सुंदर बातें हैं। साथ ही दादाजी के संस्कार कैसे थे उन्हें दर्शाते हुए उनके जीवन के प्रसंग भी हैं। तो आइए इस अंक को पढ़ें और हम भी दादा जी जैसे संस्कारी बनें।

- डिम्पल मेहता

खानदानी

वर्ष : ६ अंक: ६
अखंड क्रमांक: ६६
सितम्बर २०१८

....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

दादाश्री : संस्कारी किसे कहेंगे? घर में क्लेश हो उसे संस्कारी कहेंगे या क्लेश नहीं हो उसे?

प्रश्नकर्ता : क्लेश नहीं हो उसे!

दादाश्री : तो फिर हम संस्कारी हैं। हमारी ऐसी स्थिति होनी चाहिए न! कि घर में क्लेश नहीं हो, किसी को दुःख नहीं दें। घर में चाहे जैसा भी वातावरण हो हम उसे सहन कर लें और टकराव में भी क्लेश न करें, उत्तेजित न हो जाएँ उसे ही "खानदानी" कहते हैं। तभी घर में भगवान का वास रहेगा। यदि घर में क्लेश होगा तो सब खत्म हो जाएगा। भगवान का वास तो नहीं होगा, लक्ष्मी जी भी जाने लगेंगी।

चाहे हमारे पास संपत्ति नहीं हो, कम संपत्ति हो लेकिन खानदानी होनी चाहिए। खानदानी की सुगंध आती है। जो चोरी नहीं करता, लुच्चाई नहीं करता, किसी को फँसाकर ऐसा वैसा नहीं करता, घटिया काम नहीं करता उसे खानदानी कहते हैं।

खानदान अर्थात् क्या है कि जो दोनों ओर से नुकसान में रहता है उसे खानदान कहते हैं। दोनों ओर से नुकसान, अर्थात् क्या? जब वह कुछ खरीदने जाता है तब उसे मन में ऐसा लगे कि क्या वह कम माल दे रहा है? लेकिन वह बेचारा कमाएगा न! इसलिए चुपचाप कम लेकर आ जाता है। और यदि खुद से कोई लेने आए तो उसे उस समय ज्यादा दे देता है। उस बेचारे के पास थोड़ा ज्यादा जाए तो अच्छा! यहाँ भी लागणी और वहाँ भी लागणी। उसे खानदानी कहते हैं।

कुछ भी गलत नहीं करते उसे खानदानी कहते हैं। कोई भी लोकनिंद्य का काम नहीं करता, उसे खानदानी कहते हैं। ऐसा कार्य जिसकी लोग निंदा करें वह खानदानी नहीं होती। इसलिए खानदानी तो बहुत ऊँची वस्तु है।

बहुत साल पहले की बात है। एक बार हमारे घर में बहुत खटमल हो गए थे। जब वह गले पर काटता न तब मैं उसे वहाँ से उठाकर यहाँ पैर पर रख देता। गले पर सहन नहीं होता था इसलिए यदि गले पर काटता तो पैर के पास रख देता। क्योंकि हमारे होटल में आकर कोई भूखा जाए ऐसा तो ठीक नहीं कहा जाएगा न? वह हमारे यहाँ से खाकर जाए तो अच्छा न! इसलिए मैं खानदान बन गया। यदि पूरे शरीर पर काटते तो मैं काटने देता। मेरे हाथ में खटमल पकड़ में भी आ जाते। लेकिन उसे यहाँ पैर पर वापस रख देता। फिर भी नींद में तो अच्छी तरह खाकर ही जाते हैं न! और ये खटमल साथ में खाना ले जाने के लिए कोई बर्तन लेकर नहीं आते। जितना खाना होता है उतना खाकर घर चले जाते हैं और फिर ऐसा भी नहीं हैं कि १०-१५ दिन का एक साथ खा लेंगे! इसलिए उन्हें भूखा कैसे जाने दिया जाए? हेय! कितने खाना खाकर शांति से चले जाते हैं! उस रात हमें भी आनंद होता है कि इतने खाना खाकर गए, दो लोगों को खाना खिलाने की शक्ति नहीं है और इतनों को खाना खिलाया।

दादा की

हमने कई बातों में जानबूझकर धोखा खाया। व्यापारी भी मुझे ठग लेते! "आओ, आओ, पधारो" करके ठग लेते। मैं कहता कि भाई एक जोड़ी धोती लाओ, एक कमीज का कपड़ा लाओ और एक कोट का कपड़ा लाओ। कीमत नहीं पूछता। मुझे पता था कि सभी हमारे पहचान के हैं।

और जब कोई दूसरा व्यापारी मुझ से मिलता और मेरा कपड़ा देखकर कहता, कि "आपसे इतनी कीमत ज्यादा ली है।" तब मैं कहता कि, "वह तो मैंने जान-बूझकर ठगने दिया।" मैं जानता हूँ कि यदि वह ज्यादा नहीं लेगा तो उसके मन में ठंडक नहीं होगी। इतने अच्छे ग्राहक आए हैं यदि वह ज्यादा नहीं देंगे तो और कौन देने वाला है? ऐसे खानदान ग्राहक आए हैं वे नहीं देंगे तो दूसरे किच-किच करने वाले तो क्या देंगे?

हम कभी भी किच-किच नहीं करते। हमारे कदम जहाँ भी पड़ें वहाँ संतोष होना ही चाहिए और यदि हमारे कदम पड़ें और उसका मुँह बिगड़ जाए कि "ऐसा ग्राहक कहाँ से आ गया" क्या कहेगा? कि, धोती का जोड़ा ले गए और ऊपर से दो रुपए काट लिए।"

इसलिए हम तो जानबूझकर धोखा खाते! यह तो व्यापारियों से ठगे जाने का छोटा सा उदाहरण दिया है। लेकिन हमें सभी ठग लेते, जूते वाला भी ठग लेता!

जब रात के बारह बजे घर आते और दो कुत्ते सो रहे होते तब ऐसा सोचकर कि हमारे जूतों की आवाज़ से वे जाग जाएँगे इसलिए जूते उतारकर धीरे-धीरे घर आते। हम से कोई डर जाए उसे इंसानियत कैसे कहेंगे? बाहर के कुत्ते भी हम से नहीं डरने चाहिए। यदि हम इस तरह जूते खड़खड़ाते-खड़खड़ाते आएँ और कुत्ता कान सीधे करके खड़ा हो जाए तो हमें समझ जाना चाहिए कि ओहोहो! यहाँ चूक गए! मैं जब बाईस साल का था तब कुत्ते को भी डरने नहीं देता था।

खानदानी के प्रसंग

खानदानी घर में पले बढ़े इंसान को "वेल्डिंग" करने का मूल भाव उत्पन्न हो जाता है। यह गुण भी मेरे अंदर था। "वेल्डिंग" अर्थात् दो लोग आपस में झगड़ रहे हैं तो दोनों के बीच समाधान करवाते। दो भाई चार-पाँच बार लड़ाई कर रहे हों और आमने-सामने खूब झगड़ा हो रहा हो तो क्या करना चाहिए? दोनों की वेल्डिंग (सुलह) करके ऊपर से अपने पैसों से हम उन्हें चाय-नाश्ता भी करवाते थे। साथ ही साथ वेल्डिंग करने का खर्च तो अलग।

अब उनके लिए फ्रेन्ड की तरह मेरी कीमत कब तक रहती? जब तक वे झगड़ते, तब तक। एक बार "वेल्डिंग" हो जाने पर वे दोनों एक हो जाते और मेरे पैसे भी चले जाते। और फिर पैसे वापस नहीं मिलते। फिर भी अपने पैसों से भी ऐसा करना ज़ारी रखा था।

औरों को अपने दुःख रोकर बताने को क्या खानदानी कहेंगे? लेकिन लोग तो अपने दुःख सभी से कहते फिरते हैं। दुःख बताने की शक्ति है फिर भी सहन करता है, किसी को नहीं बताता, उसे खानदानी कहते हैं। बड़ा इंसान अपना दुःख छुपा लेता है। क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि उसमें कहने जैसा है ही क्या? क्या सामने वाला हमारा दुःख ले लेने वाला है? क्या जानवर अपने दुःख बताने आते हैं? यदि कुत्तियाँ का पैर गाड़ी के नीचे आ जाता है तो क्या वह किसी से कहने जाती है? नहीं बेचारी घिसटते-घिसटते चलती है, उसकी दवाई-बवाई कुछ भी नहीं।

यह तो नई

जो खानदान होता है वह जान-बूझकर धोखा खाता है, और तो कौन धोखा खाएगा? जैसेकि पता है कि सामने वाला व्यक्ति हमें फँसा रहा है फिर भी उसके फायदे के लिए नुकसान उठा लेता है।

जहाँ अकड़ने की स्थिति है वहाँ नम्र बन जाए, उसे खानदानी कहते हैं। जितनी ज्यादा नम्रता, उतनी ऊँची खानदानी।

ही बात है !

जो कुछ भी गलत नहीं करता, उसे खानदानी कहते हैं। कोई ऊँगली उठाए ऐसा काम नहीं करता, उसे खानदानी कहते हैं।

> जो भी काम किया यदि हमने
> उसे बता दिया कि "मैंने किया" तो
> खानदानी चली जाती है।

> ऊँचा कुल और ऊँचे भाव हैं
> तभी खानदानी कही जाएगी।

वी.आई.पी. पास

"साइन्स सिटी के उद्घाटन में जाने के लिए रौनक बहुत ही उतावला था। वह सब काम जल्दी-जल्दी कर रहा था।
डैडी, आई एम रेडी।
सिटी के एन्ट्रस पर ही बहुत ही जगमगाहट थी। मेहमान अपने परिवार के साथ हॉल में प्रवेश कर रहे थे। जैसे ही रौनक और उसके डैडी ने प्रवेश किया...
ओ भाई, कहाँ चले जा रहे हो? "वी.आई.पी." पास कहाँ है?
पास तो नहीं है... लेकिन
क्या लेकिन-वेकिन? आज दर्शकों के लिए प्रवेश बंद है। खास आमंत्रित मेहमानों को ही अंदर जाने की छूट है। कल आना।
रौनक का मुँह उतर गया...
अरे बड़ी, चियर अप। हम कल आएँगे। अभी तुम्हारा फेवरिट आइस्क्रीम हो जाए?
रौनक के चेहरे पर वापस चमक आ गई। डैडी और रौनक इधर-उधर की बातें करते हुए चल रहे थे।

तभी उनका ध्यान एक कर्कश आवाज़ की ओर गया। फुटपाथ पर बैठे हुए मोची से ग्राहक ऊँची आवाज़ ऐसा-वैसा बोल रहा था।
बेवकूफ, यह क्या किया? मैंने तुझ से ऐसा करने के लिए कब कहा था?
रौनक और डैडी थोड़ी देर के लिए वहाँ रुक गए। मोची के चेहरे पर स्थिरता थी। ज़रा सा भी प्रतिकार किए बिना, वह ग्राहक की बात सुन रहा था।
जब ग्राहक थोड़ा शांत हुआ तब...
साहब भूल हो गई। लेकिन, यह आपके जूते नहीं हैं। आपके जूते तो ये रहे।
अपनी भूल पर अफसोस किए बिना, अपने जूतों की थैली लेकर ग्राहक वहाँ से चला गया। मोची फिर से अपने काम में लग गया।
रौनक ने डैडी की तरफ देखा। डैडी ने रौनक के सिर पर प्रेम से हाथ फेरा।
अरे! बातों ही बातों में अपनी आइस्क्रीम शॉप आ भी गई। बोल कौन सी आइस्क्रीम खाएगा?

रौनक ने अपनी फेवरिट "स्ट्रोबेरी" फ्लेवर की आइस्क्रीम ऑर्डर की। आइस्क्रीम का इंतजार करते हुए रौनक का ध्यान पास के टेबल पर गया।
साहब थोड़ी सी कुर्सी खिसकाएँगे? मुझे जाने दीजिए?
लेकिन, वे श्रीमान तो खिसकने के लिए तैयार ही नहीं थे। वेटर से उल्टे सीधे शब्द कहे लेकिन वहाँ से नहीं खिसके।
थोड़ा खाँसते हुए डैडी ने धीरे से रौनक का ध्यान अपनी ओर खींचा...
बेटा, आज जो दो घटनाएँ देखीं, वे कभी मत भूलना। मोची की कोई गलती नहीं थी। फिर भी, ग्राहक का मान रखने के लिए, ग्राहक के शब्दों को सहन करके क्लेश टाल दिया।
और वेटर की इतनी विनती के बाद भी, उस व्यक्ति ने खिसकने से मना कर दिया। जो खानदान होता है वह मोची की तरह आक्षेपों को सहन करके नम्र रहता है और जहाँ खानदानी नहीं होती वहाँ ऐसी अकड़ होती है।
रौनक, एक बात हमेशा याद रखना। जो महत्व का काम करता है वह कभी लोगों की बातों से परेशान नहीं होता। और जो कोई काम नहीं करता, लेकिन अपने आप को कुछ समझता है, वह अक्कड़ बनकर अपनी अक्षमता को छुपाता है।

थोड़ी देर के लिए डैडी चुप हो गए।
और, खरा खानदानी तो उसे कहेंगे जो काम करने के बाद भी "मैंने किया" ऐसा नहीं जताता। जहाँ अकड़ की स्थिति होती है वहाँ भी नम्र रहता है।
रौनक सोच में पड़ गया।
थोड़ी हैवी डोज़ मिल गयी, बड़ी अब चलें?
घर आकर भी, रौनक डैडी की बातें मन ही मन सोच रहा था। तभी, डोर बेल बजी...
अरे मि. त्रिपाठी, आप यहाँ?

मिस्टर त्रिपाठी ने रौनक के डैडी, अजय जी का अभिवादन किया।
बहुत बड़ी भूल हो गई, अजय जी। अभी मेरे स्टाफ मेम्बर ने मुझे बताया कि आपको "साइन्स सिटी के उद्घाटन का "वी.आई.पी." पास भेजना भूल गए।"
साहब, साइन्स सिटी का निर्माण तो आपके बिना अशक्य था। आप तो हमारे सब से खास मेहमान थे और हमारी भूल की वजह से आपकी उपस्थिति नहीं थी।
अरे मिस्टर त्रिपाठी... आपको माफी नहीं माँगनी चाहिए और सही बताऊँ तो मेरा भी आज आना मुश्किल था।
रौनक, अपने डैडी को देखता ही रह गया।
साइन्स सिटी के निर्माण में डैडी का इतना बड़ा योगदान था, फिर भी उन्होंने उस वॉचमैन से कुछ नहीं कहा? उद्घाटन में आना मुश्किल था ऐसा कहकर मि. त्रिपाठी की भावना की कदर की।
रौनक को डैडी का बताया हुआ "खानदानी" शब्द का सही अर्थ, अब समझ में आया...

कीमत किसकी ?

श्रुति ने पूछा, "हाऊ कूल, सुधा। ये स्टेम्पस् कहाँ से मिले?"

पूरी क्लास नए स्टेम्पस् देखने के लिए सुधा के आसपास घिर आई।

"मेरे अंकल लंदन से लाए," सुधा की आवाज़ में एक खनक थी। "अंकल कह रहे थे कि लंदन में भी आजकल स्टेम्प कलेक्शन का बहुत क्रेज है।"

तभी बेल बजी, और सभी अपनी जगह पर बैठ गए।

"गुड आफ्टर नून क्लास," मालती मेडम ने सभी को विश किया। "आज हम ग्रीस के बारे में पढ़ेंगे।" और मेडम ने ग्रीस के एक अनोखे स्टेम्प को प्रोजेक्टर स्क्रीन पर डिस्प्ले किया।

जब से "द स्टेम्प कलेक्टर" मूवी रिलीज हुई थी, तब से बच्चों में स्टेम्प कलेक्शन की धुन सवार हो गई थी। टीचर्स भी उन स्टेम्प द्वारा बच्चों को नई-नई जगहों और व्यक्तियों के बारे में जानकारी देते थे।

स्कूल के बाद सभी ने सुधा को फिर से घेर लिया।

"हं... शेखी तो ऐसे मार रही है जैसेकि करामाती स्टेम्प मिल गए हैं। पॉप्युलर होने का इतना ही शौक है तो हो जाए पॉप्युलर। मैं तो घर जा रही हूँ।" सुधा की पॉप्युलेरिटी देखकर श्रुति को जलन हुई।

और उसने घर आकर अपना गुस्सा छोटी बहन उत्सवी पर निकाल दिया, "नॉट अगेन उत्सवी। तुझ से कितनी बार कहा है कि बेड पर किताबें फैलाकर मत रखो।"

"ओह आई एम सॉरी, दीदी। बस, यह अंतिम स्टेम्प सेट करके बुक्स उठा लेती हूँ।" उत्सवी ने धीरे से कहा।

श्रुति की नज़र उत्सवी की स्टेम्प बुक पर पड़ी। कुछ पलों के लिए उसकी नज़र एक स्टेम्प पर अटक गई। उसे विश्वास नहीं हुआ। उत्सवी की स्टेम्प बुक हाथ में लेकर उसने उस स्टेम्प को ध्यान से देखा।

"वॉट। यह तो सचमुच "फ्लाइंग वॉरियर" का स्टेम्प है। "दिस इज़ अनबिलिवेबल" स्टेम्प देखकर श्रुति के मन में तरह-तरह की तरंगे उठने लगीं, "यदि क्लास में सभी को पता चलेगा कि मेरे पास यह स्टेम्प है तो मेरा तो रौफ पड़ जाएगा। सुधा के लंदन के स्टेम्प भी इसके आगे फीके पड़ जाएँगे।"

कुछ पल के लिए श्रुति अपनी कल्पना की दुनिया में खो गई।

"क्या हुआ दीदी?" उत्सवी ने श्रुति को हिलाया।

"ओह, कुछ नहीं उत्सवी," श्रुति थोड़ी स्थिर हुई और फटाफट मन ही मन एक प्लान बनाने लगी। उत्सवी को पटाकर अपना काम निकालना श्रुति के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था।

अपनी एक्साइटमेन्ट को काबू में रखकर श्रुति ने कहा, "उत्सवी, मेरे साथ एक "डील (सौदा) करेगी?" मैं तुझे दस स्टेम्प दूँ तो तू मुझे एक स्टेम्प देगी?"

"वाह्य नॉट, दीदी?" उत्सवी खुश हो गई।

अपनी स्टेम्प बुक में से दस स्टेम्प उत्सवी को देकर, श्रुति ने उससे "फ्लाइंग वॉरियर" की स्टेम्प ले ली।

दूसरे दिन स्कूल में जितना सोचा था उससे ज्यादा श्रुति का रौफ पड़ गया। क्लासमेटस् ही नहीं सीनियर और जूनियर भी उसकी स्टेम्प देखने आए।

स्कूल से आकर, श्रुति अपना बैग रूम के कोने में फेंककर पलंग पर लेट गई। आज भी उत्सवी की बुक्स पलंग पर बिखरी हुई थीं। लेकिन, आज श्रुति को कुछ फर्क नहीं पड़ा। वह तो अपने ख्यालों की दुनिया में खोई हुई थी। थोड़ी देर तक, स्कूल में मिले हुए मान को याद करती रही। फिर करवट बदलकर पलंग पर पड़ी हुई उत्सवी की बुक हाथ में ली और ऐसे ही पेज पलटने लगी।

अचानक, वह उठकर बैठ गई। उसकी नज़र एक पेज पर स्थिर हो गई। पेज का शीर्षक था, "फ्लाइंग वॉरियर : एक अनोखा स्टेम्प।" उत्सवी ने फ्लाइंग वॉरियर स्टेम्प पर रिसर्च करके, उस पर एक निबंध लिखा था। श्रुति के मन में विचारों का घमासान उठने लगा, "इसका मतलब कि उत्सवी को उस स्टेम्प का मूल्य पता था।" देन, व्हाय-वाइ डिड शी गिव इट टू मी? उसे तो ज़रा भी संकोच नहीं हुआ और मुझे लगा कि मैंने उसे बेवकूफ बना दिया।"

श्रुति अपने विचारों में खोई हुई थी, तभी उत्सवी रूम में आई।

"अरे दीदी आपको क्या हो गया है? ऐसे रोज़ कहाँ खो जाती हो"? उत्सवी ने श्रुति को हिलाया।

थोड़ी देर तक श्रुति उत्सवी को देखती ही रही। फिर, अपने बैग में से "फ्लाइंग वॉरियर" का स्टेम्प निकालकर उत्सवी के हाथ में रखा, "उत्सवी, मुझे यह स्टेम्प नहीं चाहिए।"

"क्या हुआ दीदी," उत्सवी को श्रुति का व्यवहार कुछ अजीब सा लगा।

"उत्सवी, मुझे यह स्टेम्प नहीं चाहिए। लेकिन वह चाहिए, जिससे तुझे इतना कीमती स्टेम्प देने में ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं हुई।" मुझे ऐसा लगा कि मैं तेरे भोलेपन का फायदा उठा रही हूँ। लेकिन, तू तो पहले से ही स्टेम्प की कीमत जानती थी। फिर भी तूने धोखा खाया और मुझे पता भी नहीं चलने दिया। हाऊ?" श्रुति की आँखों में आश्चर्य था।

उत्सवी ने पूछा, "दीदी आपको याद है, पिछले साल हमारी सोसाइटी में कुछ टूरिस्ट रहने आए थे?"

"हाँ, अफकोर्स। हाऊ केन आई फॉरगेट देम? मम्मी ने उनकी कितनी मदद की थी और कुछ ही दिनों में उनकी असलियत अखबार में छप गई। चीट्र्स" श्रुति थोड़ी रुकी, "लेकिन, हमारी बात से उनका क्या लेना-देना?"

"लेना-देना है, दीदी," उत्सवी ने कहा, "उनकी धोखाधड़ी का समाचार पढ़कर मम्मी ने कहा, "वे लोग ठग निकले, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं मदद करना छोड़ दूँगी।" और फिर, मम्मी ने जो बात कही वह मुझे बहुत स्पर्श कर गई, "अन्जाने में तो सभी धोखा खाते हैं लेकिन, सामने वाले के फायदे के लिए खुद का नुकसान उठाकर, जो जान-बूझकर धोखा खाता है, वही सच्चा खानदान कहा जाता है।

श्रुति ध्यान से उत्सवी की बात सुन रही थी।

उत्सवी ने प्रेम से श्रुति के गाल पर हाथ रखा और बोली, "दीदी, मुझे पता था कि यह स्टेम्प बहुत कीमती है। लेकिन, मेरे लिए वह आपकी खुशी से ज्यादा कीमती नहीं थी। उस "डील" में मेरा नुकसान हुआ था। लेकिन आपकी इतनी बड़ी खुशी के आगे छोटे से नुकसान की क्या वैल्यू थी।"

छोटी बहन की इतनी बड़ी समझ देखकर, श्रुति की आँखें छलक गई। आज तक, श्रुति समझती थी कि वह छोटी बहन को बेवकूफ बनाती थी। लेकिन, छोटी सी बहन का खानदानी का खजाना देखकर, उसे अपनी बेवकूफी का पता चल गया।

चलो खेलें...

बालमित्रों, यह पज़ल को सुलझाने के लिए नीचे दिए गए सिक्रेट कॉड का उपयोग कीजिए।

What Can run but can't walk ? ___ ___ ___ ___ ___
20 2 12 6 5

What goes up and down without ever moving ? ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___
13 12 2 16 5 19 2 13 6

What belongs to you but is used more by others? ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___
8 3 7 5 9 2 15 6

What is broken when it is spoken ? ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___
13 16 17 6 9 19 6

What can be drawn without a pencil ? ___ ___ ___ ___ ___ ___
18 5 6 2 12 11

What can break without being touched ? ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___ ___
2 4 5 3 15 16 13 6

What is made that can't be seen ? ___ ___ ___ ___ ___
9 3 16 13 6

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
K	A	O	P	R	E	U	Y	N	F	H	T	S	D	M	I	L	B	C	W

जीवंत उदाहरण

सालों पहले की बात है। नॉरफॉक के रेल्वे स्टेशन पर एक ट्रेन आकर रुकी। एक छोटी सी आयरिश लड़की ट्रेन से उतरी। वह नीचे तो उतर गई लेकिन उसका बैग कैसे उतारा जाए? उसका बैग उसके वजन से दुगना था। लड़की ने इधर-उधर देखा। तभी उसकी नज़र एक मज़दूर पर पड़ी। वह दौड़कर मजदूर के पास गई और उससे बैग उठाकर एरुनडेल के किले तक पहुँचाने के लिए विनती की।

वह छोटी सी लड़की एरुनडेल के किले में नौकरानी का काम करने के लिए आई थी। उसकी जेब में एक शिलिंग (ब्रिटेन का पुराना पैसा) के सिवाय कुछ भी नहीं था। मज़दूर तो एक शिलिंग में किले तक बैग पहुँचाने के लिए तैयार ही नहीं था। लड़की ने काफी मिन्नतें की। उसकी आँखों में आँसू आ गए। वहाँ खड़े हुए एक व्यक्ति ने उस लड़की से कहा, "चलो मैं तुम्हें किले तक पहुँचा देता हूँ।"

उसने लड़की का बैग उठा लिया और वे बातें करते-करते किले तक पहुँचे। लड़की ने उसे जेब में पड़ी हुई एक शिलिंग दी। शुक्रिया बोलकर वह आदमी वहाँ से चला गया।

दूसरे दिन, वैभवशाली किले के एक आलीशान भवन में वह लड़की अपने मालिक से मिलने गई।

मालिक को देखकर, लड़की अवाक् रह गई। पिछली रात, उसका बैग उठाकर किले तक सही सलामत लाने वाला, हकीकत में एरुनडेल किले के मालिक, ड्यूक ऑफ नॉरफॉक खुद थे।

उस दिन लड़की को समझ में आया कि जो दिल से बड़े होते हैं, वे कभी छोटे से छोटा काम करने में हीनता महसूस नहीं करते।

देखा मित्रो, ड्यूक की कितनी ग़ज़ब की खानदानी कही जाएगी। अपनी सच्ची पहचान छुपाई, ज़रा सी भी अकड़ दिखाए बिना, सरलता से मज़दूर बनकर लड़की की मदद की।

२००२ में नीरू माँ अडालज रहने लगे। उसके बाद जब भी वे "दादा दर्शन" आते तब वहाँ रहने वाले भाई उन्हें अपडेट्स देते।

एक बार इसी तरह नीरू माँ "दादा दर्शन" आए थे। तब एक ब्रह्मचारी भाई ने कहा, " नीरू माँ आजकल पाँच दिन प्रैस की सेवा होती है और शनि-रवि गाँव-गाँव सत्संग में जाना होता है। पहले तो आप "दादा दर्शन" रहते थे इसलिए जैसे ही हम सोमवार सुबह सत्संग टूर से वापस आते कि तुरंत आप सब पूछ लेते थे कि मान खाया? कहाँ पोल मारी? कहाँ दृष्टि बिगाड़ी? कहाँ ठोका

ठोक जवाब दिए? आदि। अब आप यहाँ नहीं हैं। और इसके साथ ही मान की कामना बहुत हो जाती है क्योंकि शनि-रवि सत्संग के लिए जाते हैं तो सभी लोग पैर छूते हैं। तो उसमें बैलेन्स कैसे रखें?

नीरू माँ ने तुरंत उपाय बताया, "तुम ऐसा करना एक शनि-रवि सत्संग मे जाना, एक शनि-रवि साधना के

मीठी यादें

लिए दादा दर्शन में रहना। और जिस शनि-रवि तुम "दादा दर्शन" में रहो तब जिस तरह तुम सत्संग के लिए शनिवार सुबह छः बजे चले जाते हो और रविवार रात के साढ़े ग्यारह बजे आते हो, उसी तरह जिस शनि-रवि साधना के लिए दादा दर्शन में रहो, तब भी सुबह साढ़े छः बजे उठ जाना और रविवार रात के साढ़े ग्यारह बजे तक विषय पर, मान की कामना पर साधना करना। प्रैस में नहीं जाना है या और कोई काम मत करना। और यदि कोई "दादा दर्शन" के टेरस पर दर्शन करने के लिए आए और पूछे कि आप इस समय यहाँ क्यों हो? शनि-रवि सत्संग में नहीं गए? तो साफ-साफ कह देना कि नीरू माँ ने मुझे पनिशमेन्ट दी है। मान पर वर्क आउट करने के लिए। कोई कपट मत करना।"

ऐसे थे हमारे नीरू माँ! उनकी सलाह भी कितनी अदभुत थी कि व्यक्ति को उसके रोग में से बाहर निकालकर ही रहते।

U.S.A (jacksonville-2018)

गुरुपूर्णिमा के दौरान बच्चों ने किया कल्चरल शो

Puzzle Answer : 1) WATER 2) STAIREASE 3) YOUR NAME 4) SILENCE 5) BREATH 6) A PROMISE 7)NOISE

Akram Express

September 2018
Year : 6, Issue : 6
Conti. Issue No.: 66

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

बहुत बहुत अभिनंदन!!!

International Venice Golf

में तीसरा नंबर प्राप्त किया।

नाम : वरुष्का शाह
उम्र : ९ वर्ष
LMHT अडालज

3rd Rank

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** या **Kids Website** की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।

https://kids.dadabhagwan.org/knowledge-house/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस के ऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने के दौरान जो रकम दी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025